सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2021 का चतुर्थ अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इस अंक में प्रथम लेख के रूप में देवर्षि कलानाथ शास्त्री जी का 'रामनवमी पर्व और हमारी सांस्कृतिक परम्परा' लेख समाहित है तथा पण्डित अनन्त शर्मा का 'पण्डित मधुसूदन ओझा का गीताविषयक चिन्तन' लेख है। इसी क्रम में रघुनन्दन शर्मा द्वारा 'वातस्य विकारा नेत्ररोगाश्च' लेख लिखा गया है। डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा ने 'आचमनरहस्य' लेख प्रस्तुत किया है। आचार्य माधव शास्त्री ने 'नाड़ी' लेख में नाड़ी के प्रकार बताये हैं। काव्यविधा में डॉ. ओमप्रकाश पारीक का 'पञ्चदलम्' भावानुभूतियों का रोचक प्रस्तुतीकरण करता है। अन्त में डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत् प्रस्तावना शतकम्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्व हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

सम्पादक

डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा